जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 43 संख्याः 279 प्रभात बीकानेर, शुक्रवार 6 मई, 2022 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रू.

केरल में इलैक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन की टैस्टिंग में गड़बड़ी पायी गयी

यू.डी.एफ. के उम्मीदवार के वकील ने कहा कि, ''ट्रायल रन'' के दौरान भाजपा को एक्स्ट्रा वोट मिल रहे थे

- सरकारी अधिकारियों ने 20 ई.वी.एम. मशीनों का ट्रायल किया, इनमें से चार मशीनों ने भाजपा को दो ''एक्स्ट्रा'' वोट दिए।
- यू.डी.एफ. उम्मीदवार के वकील के अनुसार उन्होंने उन चारों मशीनों की जांच के आदेश दिये।
- अब यह ई.वी.एम. मशीनों का मामला सुप्रीम कोर्ट में चल रहा है तथा सुनवाई पूरी हो जाने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले के निर्णय को सुरक्षित रखा है।
- वकील ने कहा, यह विचारणीय बात है कि, न तो यू.डी.एफ. और न ही वामपंथी गठबंधन के उम्मीदवार को गल्ती से भी एक आधा वोट भी एक्स्ट्रा नहीं मिला। केवल भाजपा को ही क्यों एक्स्ट्रा वोट मिले।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अप्रेल। क्या दाल में कुछ काला है या फिर पूरी दाल ही काली है? वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए कल से मतदान शुरु होकर पूरे माह चलेगा। इसके बाद ही यह तय होगा कि देश का भविष्य क्या है और राष्ट्र किस दिशा में जाएगा। भाजपा 400 पार की बात करती है, लेकिन विपक्ष कहता है कि इसके लिए ज़मीनी वास्तविकता बहुत कठिन है क्योंकि जनता भाजपा की विभाजनकारी और साम्प्रदायिक राजनीति को नकार रही है।

पर इसके बीच में क्या है?

ई.वी.एम.?

ई.वी.एम. की सच्चाई और प्रमाणिकता को लेकर भारी संदेह व्यक्त किए गए है और यह प्रश्न एक से अधिक बार उठा है कि क्या नरेन्द्र मोदी ई.वी.एम. की मदद से चुनाव जीत रहे हैं। ई.वी.एम. और वी.वी.पी.ए.टी. के 100 प्रतिशत मिलान की मांग को लेकर एक केस सुप्रीम कोर्ट में है। सुनवाई के बाद आदेश सुरक्षित रख लिया गया है। इस केस से निकट रूप से संबंधित एक सीनियर एडवोकेट ने बताया कि दो जजों की बैंच इस अति महत्वपूर्ण केस की जिस तरीके से सुनवाई कर रही है, उसे लेकर वकीलों ने आक्रोश व्यक्त किया है। इस संदर्भ में केरल में एक महत्वपूर्ण प्रकरण हुआ जब ई.वी.एम. का मॉक ड्रिल किया जा रहा था।

एल.डी.एफ. (लैफ्ट डैमोक्रेटिक फ्रंट) और यू.डी.एफ. (यूनाईटेड डैमोक्रेटिक फ्रंट) के प्रत्याशियों के एजेन्टों ने आरोप लगाया कि बुधवार 17 अप्रेल को कासरगोड में मॉक पोलिंग के दौरान कम से कम चार इलैक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन्स (ई.वी.एम्स.) ने गलत तरीके से भाजपा के पक्ष में वोट दर्ज किए।

कासरगोड लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के एल.डी.एफ. प्रत्याशी एवं माकपा नेता एम.वी. बालकृष्णन ने जिला कलैक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी इन्बासेकर के. को एक शिकायत प्रस्तुत कर ई.वी.एम. की गलतियों पर गौर करने का अनुरोध किया। यू.डी.एफ. प्रत्याशी राजमोहन उन्नीथान के एजेन्ट मोहम्मद नासर चेरकलाम अब्दुल्लाह ने कासरगोड लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र के असिस्टैन्ट रिटर्निंग ऑफिसर (ए.आर.ओ.) से इन त्रुटिपूर्ण मशीनों को बदलने का अनुरोध किया। भाजपा के एम.एल.अश्विनी कासरगोड से एन.डी.ए. के प्रत्याशी हैं।

नासर चेरकलाम ने बताया कि भाजपा का चुनाव चिन्ह ''कमल'' कासरगोड निर्वाचन क्षेत्र में ई.वी.एम. के मॉक ड्रिल के दौरान अतिरिक्त वोट प्राप्त कर रहा था। उन्होंने यह भी बताया कि वोटिंग मशीन्स पर कांग्रेस का चुनाव चिन्ह ''हाथ'' अन्य पार्टियों के चुनाव चिन्ह की अपेक्षा छोटा है। उन्होंने अधिकारियों से इसमें बदलाव का अनुरोध किया। कासरगोड लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र की वोटिंग मशीन्स में एन.ओ.टी.ए. (नन ऑफ द अबोव) सहित 10 विकल्प हैं।

अधिकारियों ने एक साथ 20 मशीनों को चैक किया। ई.वी.एम. के सभी 10 विकल्पों का जब एक-एक बार दबाया गया तब वोटर वैरिफियाबल पेपर ऑडिट ट्रेल (वी.वी.पी.ए.टी.) ने चार मशीनों में दो वोट भाजपा को दिए। नासर ने बताया कि जब कमल के चुनाव चिन्ह वाला बटन नहीं दबाया गया, तब

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कर्नाटक में मौसम बना कांग्रेस की मुसीबत

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अप्रेल। कर्नाटक के अधिकांश भागों में जलवायु परिवर्तन से हुई भारी गर्मी और बैंगलुरू में पेयजल किल्लत, चुनाव का समय कांग्रेस के लिए इससे बुरा नहीं हो सकता था। कुछ माह पूर्व हुए विधानसभा चुनावों में

- जलवायु परिवर्तन और उसकी वजह से बढ़ती गर्मी और बैंगलौर में पानी की किल्लत, कर्नाटक में ज्यादा सीटें पाने की कांग्रेस की उम्मीदों पर पानी फेर सकती है।

विश्वसनीय प्रदर्शन के बाद कांग्रेस इस लोकसभा चुनाव में अच्छी-खासी सीटें जीतने का लक्ष्य रखकर चल रही थी। कई स्थानीय मीडिया संस्थान कांग्रेस के लिए कर्नाटक की कुल 28 सीटों में से 10 से 19 तक जीतने की भविष्यवाणी कर रही है, जो कि पिछले लोकसभा चुनाव में जीती गई से ज्यादा है। तो क्या

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जानबूझकर आम और मिठाई खा रहे हैं केजरीवाल

ई.डी. ने दिल्ली की अदालत में शिकायत की

- ई.डी. ने बताया कि, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल को टाइप टू डायबिटीज़ है और वे रोज़ घर से खाना मंगाकर आलू पूरी, आम व मिठाइयां खा रहे हैं, जबकि बीमारी के कारण उन्हें ये सब नहीं खाना चाहिए।
- ई.डी. का आरोप है कि, केजरीवाल ये सब इसलिए कर रहे हैं ताकि उनका स्वास्थ्य बिगड़ जाए और इलाज के नाम पर उन्हें जमानत मिल जाए।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अप्रैल। एनफोर्समैंट डायरैक्टोरेट (ई.डी.) ने गुरूवार को एक सिटी कोर्ट में कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री व आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय समन्वयक, जिन्हें टाइप-2 स्तर की डायबिटीज़ बीमारी है वे अपने शुगर लेवल को बढ़ाने के लिए जानबूझकर जेल में आम व मिठाइयां खा रहे हैं।

ई.डी. के वकील जोहेब हुसैन ने कोर्ट को सूचित किया कि चिंता का कारण यह है कि उन्हें घर पका हुआ निर्धारित भोजन खाने की इजाज़त इसलिए दी गई थी क्योंकि उन्होंने दावा किया था कि वे उच्च स्तरीय मधुमेह रोग से पीड़ित हैं। वे रोजाना आलू की पूड़ी, आम, मिठाइयां रोजाना खा रहे हैं। यह इसलिए किया जा रहा है ताकि चिकित्सा सुविधा लेने के आधार पर जमानत मिल सके।''

हुसैन ने कोर्ट से कहा कि, ''कोर्ट के समक्ष उनका खुराक चार्ट प्रस्तुत किया गया है। भोजन चार्ट में आम व मिठाइयां का उल्लेख है जिसे हमने कोर्ट के समक्ष प्रस्तुत कर दिया है। वे खासतौर से मीठा खाना खा रहे हैं जिसे खाने की किसी भी मधुमेह के रोगी को इजाज़त नहीं होती है। यह मामला कोर्ट के विचाराधीन लम्बित है।''

इस मामले की सुनवाई कर रही विशेष जज कावेरी बवेजा ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे इस मामले में अपनी रिपोर्ट शुक्रवार तक दाखिल करे, तब इस मामले पर संभवतया कोर्ट पुनः सुनवाई करेगा।

केजरीवाल वर्तमान में तिहाड़ जेल में बंद हैं क्योंकि केन्द्रीय जांच एजेंसी दिल्ली शराब नीति मामले में मनी लॉड्रिंग के लगे आरोपों की जांच कर रही है। केजरीवाल, जो एक गंभीर डायबिटीज़ से पीड़ित हैं, ने इससे पूर्व भी कोर्ट से गुहार लगाई थी कि उन्हें वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग क माध्यम से नियमित रूप से डॉक्टर से परामर्श लेने की इजाज़त प्रदान की जाए। केजरीवाल के वकील ने कोर्ट को बताया था कि उनका ब्लड शुगर लैवल अस्थिर हो रहा है और वह गिर कर नीचे 46 तक आ गया है। सोमवार को दिल्ली की कोर्ट ने उनकी न्यायिक हिरासत को 23 अप्रैल तक बढ़ा दिया था।

चुनावी सभाओं में रंग नहीं जमा पा रही हैं ममता बनर्जी

इसके विपरीत भाजपा नेता सुवेन्दु अधिकारी की सभा में भारी भीड़ देखी जा रही है

- मुर्शिदाबाद में रामनवमी जुलूस पर पथराव के मामले में ममता बनर्जी ने भड़काऊ बयानबाजी भी की, पर इस बार जनता की प्रतिक्रिया मौन रही।
- जनता में ममता बनर्जी के प्रति इस कदर नाराजगी है कि, उत्तरी बंगाल के एक क्षेत्र से गुजर रही ममता बनर्जी की कार को देख कर सड़क किनारे खड़े लोगों ने चोर-चोर के नारे लगाए।
- ममता बनर्जी वहां से खिसक लीं, पर बाद में अवश्य बोलीं कि, वहां रूकती तो मैं उनकी ज़बान खींच लेती। ममता ने इस प्रतिक्रिया से हिंसा भड़काने की कोशिश की, पर जनता ने ममता बनर्जी की प्रतिक्रिया का जमकर मज़ाक उड़ाया।
- ममता बनर्जी के विपरीत सुवेन्दु अधिकारी भारी भीड़ खींच रहे हैं, उनके भाषण का लहजा भी काफी तीखा हो गया है।
- ऐसा लगता है लोकसभा चुनाव बंगाल की राजनीति को नई दिशा दे सकते हैं।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 18 अप्रेल। ममता बनर्जी अपनी चुनावी रैलियों में ऐसे मुद्दे उठा रही हैं जिनका जनता पर कोई असर नहीं हो रहा है। पिछले वर्ष रामनवमी पर कोलकाता के हावड़ा उपनगर और राज्य के कई अन्य स्थानों पर व्यापक हिंसा हुई थी, उसके ठीक विपरीत यह वर्ष अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण ढंग से गुजरा।

हिंसा की एकमात्र घटना मुर्शिदाबाद में होने की खबर है, जहाँ पत्थरबाजी की गई और मस्जिद के पास से गुजर रहे एक जुलूस पर हमला किया गया। अन्यथा, हावड़ा का शेष हिस्सा शांत रहा। इसी तरह के अन्य संवेदनशील स्थानों पर भी शांति रही।

इसके बावजूद, तृणमूल सुप्रीमो ममता बनर्जी ने नॉर्थ बंगाल स्थित निकटवर्ती राजनगर की एक चुनावी रैली में यह कहकर प्रहार किया कि विपक्षी भाजपा ने मुर्शिदाबाद में हिंसा की योजना बनायी थी। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा वोट जुटाने की खातिर समुदायों को विभाजित करने का खेल खेलने की कोशिश कर रही थी।

तथापि, बनर्जी द्वारा जोर-शोर से लगाए जा रहे आरोपों पर जनता की प्रतिक्रिया मौन ही रही। लगता है कि ममता बनर्जी के आरोप और प्रतिक्रियाएँ इतनी अधिक बार दोहरायीं जा चुकी हैं कि अब उन्हें लेकर संशय उत्पन्न होने लगा। चुनाव शुरु होने वाले है। लेकिन ममता के चुनावी संबोधनों का कोई असर नहीं है, जबकि इससे पहले के वर्षों में उनके भाषणों पर की भारी सराहना होती थी। बंगाल के राजनीतिक टिप्पणिकारों के अनुसार तृणमूल सुप्रीमो का चुनावी रैलियों में प्रदर्शन फीका है। भाजपा के स्टार प्रचारक सुवेन्दु अधिकारी अपनी रैलियों में भारी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)